निःस्वार्थ मित्रता

एक दिन सुबह तालावके किनारे रहनेवाली छछूँदरने विलमें-से अपना सिर निकाला। उसकी मूँछें कडी और भूरी थी और उसकी पूँछ काले वाल्ट्यूवकी तरह थी। इस समय वत्तखके छोटे-छोटे वच्चे तालावमे तैर रहे थे और उनकी माँ वुड्ढी वत्तख उन्हें यह सिखा रही थी कि पानीमे किस तरह सिरके वल खडा होना चाहिए।

''जव तक तुम सिरके वल खडा होना नही सीखोगे, तव तक तुम ऊँची सोसायटीके लायक नही वन सकोगे।'' वत्तख उन्हे समझा रही थी और वार-वार उसे खुद करके दिखला रही थी, किन्तु वच्चे उसकी ओर कुछ भी घ्यान नही दे रहे थे क्योकि वे इतने छोटे थे कि अभी सोसायटी-का महत्त्व नही समझते थे।

"कैसे नालायक वच्चे है," छछूँदर चिल्लायी "इन्हें तो डुवो देना चाहिए।"

"नही जी! अभी तो ये वच्चे है। और फिर माँ कभी डुवोनेका विचार कर सकती है!"

"आह! माँकी भावनाओंसे तो अभी मैं अपरिचित हूँ! वास्तवमें मै अभी अविवाहित हूँ और रहूँगी भी! यो प्रेम अच्छी चीज़ होती है किन्तु मित्रता उससे भी वड़ी चीज़ होती है!"

"ये तो ठीक है, किन्तु मित्रताका कर्त्तव्य तुम क्या समझती हो।" एक जलपक्षीने पूछा जो पासके एक नरकुलकी डालपर वैठा हुआ यह वार्ता-लाप सुन रहा था।

"हाँ, यही मै भी जानना चाहती हूँ!" वत्तखने कहा और अपने बच्चोको दिखानेके लिए सिरके बल खड़ी हो गई।

"कैसा पागलपनका सवाल है!" छछूँदरने कहा—"मै यही चाहता हूँ कि मेरा अनन्य मित्र मेरे प्रति अनन्य रहे, और क्या?"

"और तुम उसके वदलेमे क्या करोगे?" छोटे जलपक्षीने पूछा और उतरकर किनारेपर वैठ गया।

"तुम्हारा सवाल मेरी समझमे नही आया!" छछूँदरने जवाव दिया।

"अच्छा तो मै इस विपयपर तुम्हे एक कहानी सुनाऊँ।" जलपक्षीने कहा।

"वहुत दिन हुए एक ईमानदार आदमी था। उसका नाम था हैन्स!"

"ठहरो क्या वह कोई वडा आदमी था?" छछूँदरने पूछा।

"नहीं वह वड़ा आदमी नही था, वह ईमानदार आदमी था। हाँ, वह हृदयका वहुत साफ था और स्वभावका वड़ा मीठा। वह एक छोटी-सी कुटियामे रहता था और अपनी वगियामे काम करता था। सारे देहातमे कोई इतनी अच्छी वगिया नही थी। गेदा, गुलाव, चम्पा, केतकी, हुस्नेहिना, इश्कपेचां सभी उसके वागमे मौसम-मौसमपर फुलते थे। कभी वेला, तो कभी रातरानी, कभी हर्रासगार तो कभी जूही—इस तरह हमेशा उसकी वगियामे रूप और सौरभकी लहरें उड़ती रहती थी।

हैन्सके कई मित्र थे किन्तु उसकी विशेप घनिष्ठता ह्यू मिलरसे थी। मिलर वहुत धनी था किन्तु फिर भी वह हैन्सका इतना घनिष्ठ मित्र था कि कभी वह विना फल-फूल लिये वहाँसे वापस नही जाता था। कभी वह झुककर फलोका एक गुच्छा तोड लेता था, तो कभी जेवमे फल तोड़कर भर ले जाता था।

"सच्चे मित्रोमें कभी स्वार्थका लेश भी नही होना चाहिए," मिलर कहा करता था और हैन्सको गर्व था कि उसके मित्रके विचार इतने ऊँचे है।

कभी-कभी पड़ोसियोको इस बातसे आश्चर्य होता था कि धनी मिलर कभी अपने निर्धन मित्रको कुछ भी नही देता था, यद्यपि उसके गोदाममे सैकड़ो बोरे आटा भरा रहता था, उसकी कई मिलें थी और उसके पास बहुत-सी गायें थी। मगर हैन्स कभी इन सब बातोपर ध्यान नही देता था। जब मिलर उससे नि स्वार्थ मित्रताके गुण बखानता था तो हैन्स तन्मय होकर सुना करता था।

हैन्स हमेशा अपनी बगियामें काम करता था। बसन्त, ग्रीष्म और पतझड़में वह बहुत सन्तुष्ट रहता था किन्तु जब जाडा आता था और वृक्ष फल-फूल विहीन हो जाते थे तो वह बहुत ही निर्धनतासे दिन बिताता था, क्योकि कभी-कभी उसे बिना भोजनके भी सो जाना पडता था। इस समय उसे अकेलापन भी बहुत अनुभव होता था क्योकि जाडेमे कभी मिलर उससे मिलने नही आता था।

"जब तक जाडा है तब तक हैन्ससे मिलने जाना व्यर्थ है," मिलर अपनी पत्नीसे कहा करता था—"जब लोग निर्धन हों तब उन्हें अकेले ही छोड देना चाहिए, व्यर्थ जाकर उनसे मिलना उन्हे संकोचमे डालना है। कम-से-कम मेरा तो मित्रताके विषयमें यही विचार है! जब बसन्त आयेगा तब मैं उससे मिलने जाऊँगा। तब वह मुझे फूल उपहारमें देगा और उनसे उसके हृदयको कितनी प्रसन्नता होगी! मित्रकी प्रसन्नताका ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है!"

"वास्तवमें तुम अपने मित्रका कितना ध्यान रखते हो!" अगीठीके पास आरामकुर्सीपर बैठी हुई उसकी पत्नीने कहा—"मैत्री-धर्मके विषयमे राजपुरोहितके विचार भी इतने ऊँचे नही होगे यद्यपि वह तिमंजिले मकानमे रहता है और उसके पास एक हीरेकी अँगूठी है!"

"क्या हमलोग हैन्सको यहाँ नही बुला सकते!" मिलरके सबसे छोटे लड़केने पूछा—"यदि वह कष्टमें है तो मैं उसे अपने साथ खिलाऊँगा और अपने सफेद खरगोश दिखाऊँगा!"

"तुम कितने वेवकूफ लडके हो!" मिलरने डाँटा—"तुम्हें स्कूल भेजनेसे कोई फायदा नही हुआ। तुम्हे अभी ज़रा भी अक्ल नही आई। अगर हैन्स यहाँ आयेगा और हमारा वैभव देखेगा तो उसे ईर्ष्या होने लगेगी और तुम जानते हो ईर्ष्या कितनी निन्दित भावना है! मै नही चाहता कि मेरे एक-मात्र मित्रका स्वभाव विगड जाय। मै उसका मित्र हूँ और उसका ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है! अगर वह यहाँ आये और मुझसे कुछ आटा उधार माँगे तो भी मै नही दे सकता। आटा दूसरी चीज़ है, मित्रता दूसरी चीज। दोनो शब्द अलग है, दोनोके अर्थ अलग है, दोनोके हिज्जे अलग है! कोई वेवकूफ भी यह समझ सकता है!"

"तुम कैसी चतुरतासे वाते करते हो" मिलरकी पत्नीने कहा—"तुम्हारी वाते पादरीके उपदेशसे भी ज्यादा प्रभावोत्पादक होती है क्योकि इन्हें सुनते-सुनते जल्दी झपकी आने लगती है।"

"वहुतसे लोग कार्य चतुरतासे कर लेते है," मिलरने उत्तर दिया—"किन्तु चतुरतासे सलाम वहुत कम लोग कर पाते है जिससे स्पष्ट है कि वात करना अपेक्षाकृत कठिन कला है।" उसने मेजके पार वैठे हुए अपने छोटे वच्चेकी ओर इतनी क्रोधभरी निगाहसे देखा कि वह रोने लगा!

"क्या यही कहानीका अन्त है?" छछूँदरने पूछा।

"नही जी, यह तो अभी आरम्भ है!" जल-पक्षीने कहा।

"ओह, तो तुम अच्छे कथाकार नही हो—युगके विलकुल पीछे—साहित्यमे तो हर कहानीकार पहले अन्तका वर्णन करता है फिर आरम्भ-का विस्तार करता है और अन्तमे मध्यपर लाकर कहानी समाप्त कर देता है। यही यथार्थवादी कला है। कल मैने स्वयम् एक आलोचकसे ऐसा सुना था जो मोटा चश्मा लगाये हुए घूम रहा था और एक नौजवान लेखकको

यही समझा रहा था। जब कभी वह लेखक कुछ प्रतिवाद करता था तो आलोचक कहता था—"हूँ, अभी कुछ दिन पढ़ो !"

"खैर, तुम अपनी कहानी कहो। मुझे मिलरका चरित्र बड़ा गम्भीर लग रहा है। बड़ा स्वाभाविक भी है। बात यह है कि मैं भी मित्रताके प्रति इतने ही ऊँचे विचार रखती हूँ।"

"अच्छा तो ज्यों ही जाड़ा समाप्त हुआ और वनन्ती फूल अपनी पाँखुडियाँ फैलाकर धूप खाने लगे मिलरने अपनी पत्नीसे हैन्सके पास जानेका इरादा प्रकट किया।

"ओह तुम कितना ध्यान रखते हो हैन्सका !" उसकी पत्नी बोली—"और देखो वह फूलोंकी डोलची ले जाना मत भूलना !"

और मिलर वहाँ गया।

"नमस्कार हैन्स !" मिलरने कहा।

"नमस्कार !" अपना फावडा रोककर हैन्सने कहा और बहुत खुश हुआ।

"कहो जाड़ा कैसा कटा !" मिलरने पूछा।

"ओह ! तुम सदा मेरी कुशलताका ध्यान रखते हो।" हैन्सने गद्गद स्वरोंमें कहा—"कुछ कष्ट अवश्य था, किन्तु अब तो वसन्त आ गया है और फूल बढ रहे हैं !"

"हम लोग कभी-कभी सोचते थे कि तुम कैसे दिन बिता रहे होगे ?" मिलरने कहा।

"सचमुच तुम कितने भावुक हो ! मैं तो सोच रहा था तुम मुझे भूल गये हो !"

"हैन्स ! मुझे कभी-कभी तुम्हारी बातोंपर आश्चर्य होता है—मित्रता कभी भुलाई भी जा सकती है ! यही तो जीवनका रहस्य है ! वाह तुम्हारे फूल कितने प्यारे है।"

"हाँ वहुत अच्छे है !" हेन्स वोला—"और किस्मतसे कितने अधिक फूले है ! इस वर्ष मै इन्हे सेठकी पुत्रीके हाथ वेचूँगा और अपनी वैलगाड़ी वापस खरीद लूँगा !"

"वापस खरीद लोगे ? क्या तुमने उसे वेच दिया ? कितनी नादानी की तुमने !"

"वात यह है !" हेन्सने कहा "जाडेमे मेरे पास एक पाई भी नही थी। इसलिए पहले मैने अपने चाँदीके वटन वेंचे, वादमे अपना कोट वेचा, फिर अपनी चाँदीकी जंजीर वेची और अन्तमे अपनी गाड़ी वेच दी ! मगर अव मै उन सवको वापस खरीद लूँगा !"

"हेन्स !" मिलरने कहा—"मै तुम्हें अपनी गाड़ी दूँगा। उसका दायाँ हिस्सा गायव है और वाये पहियेके आरे टूटे हुए है, फिर भी मै तुम्हे दे दूँगा। मै जानता हूँ यह वहुत वड़ा त्याग है और वहुतसे लोग मुझे इस त्यागके लिए मूर्ख भी कहेगे। मगर मै सासारिक लोगोकी भाँति नही हूँ। मै समझता हूँ सच्चे मित्रोका कर्त्तव्य त्याग है और फिर अव तो मैने नई गाड़ी भी खरीद ली है। अच्छा है, अव तुम चिन्ता मत करो मै अपनी गाड़ी तुम्हे दे दूँगा !"

"वास्तवमे यह तुम्हारा कितना वडा त्याग है !" हेन्सने आभार स्वीकार करते हुए कहा—"और मै उसे आसानीसे वना लूँगा। मेरे पास एक वड़ा सा तख्ता है।"

"तख्ता !" मिलर वोला—"ओह, मुझे भी तो एक तख्तेकी जरूरत है। मेरे आटागोदामकी छतमे एक छेद हो गया है। अगर वह नही वना तो सव अनाज सील जायगा। भाग्यसे तुम्हारे ही पास एक तख्ता निकल आया। आश्चर्य है। भले कामका परिणाम सदा भला ही होता है। मैने अपनी गाडी तुम्हे दे दी और तुम अपना तख्ता मुझे दे रहे हो। यह ठीक है कि गाड़ी तख्तेसे ज्यादा मोलकी है मगर मित्रतामे इन वातोका ध्यान

नही किया जाता। अभी निकालो तख्ता, तो आज ही मैं अपना गोदाम ठीक कर डालूँ।"

"अवश्य!"—हैन्सने कहा और वह कुटियाके अन्दरसे तख्ता खीच लाया और उसने उसे वाहर डाल दिया।

"ओह! यह वहुत छोटा तख्ता है!" मिलर वोला—"शायद तुम्हारे लिए इसमेंसे विलकुल न वचे—मगर इसके लिए मैं क्या करूँ। और देखो मैंने तुम्हें गाडी दी है तो तुम मुझे कुछ फूल नही दोगे। यह लो! टोकरी खाली न रहे!"

"विलकुल भर दूँ!" हैन्सने चिन्तित स्वरोमे पूछा—क्योकि डोलची वहुत वडी थी और वह जानता था कि उसे भर देनेके वाद फिर वेचनेके लिए एक भी फूल नही वचेगा, और उसे अपने चाँदीके वटन वापस लेने थे।

"हाँ और क्या!" मिलरने उत्तर दिया "मैंने तुम्हें अपनी गाडी दी है, अगर मैं तुमसे कुछ फूल माँग रहा हूँ तो क्या ज्यादती कर रहा हूँ। हो मकता है मेरा विचार ठीक न हो, मगर मेरी समझमे मित्रता विलकुल स्वार्थहीन होनी चाहिए।"

"नही प्यारे मित्र! तुम्हारी खुशी मेरे लिए वड़ी चीज़ है, मैं तुम्हें नाखुश करके अपने चाँदीके वटन नही लेना चाहता।" और उसने फूल चुन-चुनकर वह डोलची भर दी।

अगले दिन जव वह क्यारियाँ ठीक कर रहा था तव उसे सडकसे मिलरकी पुकार सुनाई दी। वह काम छोड़ कर भागा और चहारदीवारीपर झुककर झाँकने लगा। मिलर अपनी पीठपर अनाजका एक वडा-सा वोरा लादे खडा था।

"प्यारे हैन्स!" मिलरने कहा—"जरा इसे वाज़ार तक पहुँचा दोगे।"

'भाई आज तो माफ करो!" हैन्सने सकुचाते हुए कहा "आज तो मैं

सचमुत बहुत व्यस्त हूँ ! मुझे अपनी सब लतरे चढानी है, सब फूलके पौधे सीचने है और दूब तराशनी है।"

"अफसोस है !" मिलरने कहा "यह देखते हुए कि मैने तुम्हें अपनी गाडी दी है, तुम्हारा इस प्रकार इन्कार करना शोभा नही देता !"

"नही भैया, ऐसा ख्याल क्यो करते हो !" हैन्स बोला, वह भागकर टोपी पहनने गया और फिर कन्धोपर बोरा लादकर चल दिया।

धूप बहुत कडी थी और सडकपर बालू तप रही थी। छ मील चलनेपर हैन्स बेहद थक गया, लेकिन वह हिम्मत नही हारा, चलता ही गया और अन्तमें बाजारमे पहुँच गया। कुछ देर तक इन्तजार करनेके बाद उसने खरे दामोपर बिक्री की और जल्दीसे लौट आया।

जब वह सोने जा रहा था तो उसने मनमे कहा—"आज बड़ा बुरा दिन बीता, मगर मुझे खुशी है मैने मिलरका दिल नही दुखाया, वह मेरा मित्र है और फिर उसने मुझे अपनी गाडी दी है।"

दूसरे दिन तडके मिलर हैन्ससे रुपये लेने आया, मगर हैन्स इतना थका था कि वह अब भी पलगपर पड़ा था।

"सच कहता हूँ" मिलर बोला—"तुम बडे आलसी मालूम देते हो। मैने सोचा था गाडी मिल जानेपर तुम मेहनतसे काम करोगे ! आलस्य बहुत बडा दुर्गुण है ! मै नही चाहता कि मेरा कोई मित्र आलसी बने। माफ करना मै मुँहफट बातें करता हूँ सिर्फ यही सोचकर कि तुम्हारी चिन्ता रखना मेरा धर्म है। लल्लो-चप्पो तो कोई भी कर सकता है, मगर सच्चे मित्रका कार्य सदा अपने मित्रको दुर्गुणोसे बचाना होता है।"

"मुझे बहुत दुख है !" हैन्सने आँखें मलते हुए कहा—"मै बहुत थका था।"

"अच्छा उठो !" मिलरने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—"चलो ज़रा मुझे गोदामकी छत बनानेमे मदद दो !"

मिलर अपने बागमें जाकर काम करनेके लिए चिन्तित था क्योंकि उसके पौधोंमें दो दिनसे पानी नहीं पड़ा था।

"अगर मैं कहूँ कि मैं व्यस्त हूँ तो इससे तुम्हें ठेस तो नहीं पहुँचेगी !" उसने दबी हुई आवाज़में पूछा।

"खैर तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि मित्रताके ही नाते मैंने तुम्हे अपनी गाड़ी दी है, लेकिन अगर तुम मेरा इतना काम भी नहीं कर सकते तो कोई हर्जा नहीं, मैं खुद कर लूँगा।"

"नहीं-नहीं भला यह कैसे हो सकता है !" हैन्सने कहा—वह फौरन तैयार होकर मिलरके साथ चल दिया।

वहाँ उसने दिन भर काम किया। शामके वक्त मिलर आया।

"हैन्स तुमने वह छेद बन्द कर दिया ?" मिलरने पूछा।

"हाँ बिलकुल बन्द हो गया"—हैन्सने सीढ़ीसे उतरकर जवाब दिया।

"आहा !" मिलर बोला—"दुनियामें दूसरोंके लिए कष्ट उठानेसे ज्यादा आनन्द और किसी काममें नहीं आता।"

"मुझे तो सचमुच तुम्हारे विचारोंसे बड़ा सुख मिलता है !" हैन्सने कहा और माथेसे पसीना पोंछकर बोला—"मगर न जाने क्यों मेरे मनमें कभी इतने ऊँचे विचार नहीं आते !"

"कोई बात नहीं, प्रयत्न करते चलो !" मिलरने कहा, "अभी तुम्हें-मित्रता क्रियात्मक रूपमें आती है, धीरे-धीरे उसके सिद्धान्त भी समझ लोगे ! अच्छा, अब तुम जाकर आराम करो, क्योंकि कल तुम्हे मेरी भेड़ें चराने ले जानी है !"

इस तरहसे वह कभी अपने फूलोंकी देख-भाल नहीं कर पाता था क्योंकि उसका मित्र कभी न कभी आकर उसे कोई न कोई काम बता दिया करता था। हैन्स कभी-कभी बहुत परेशान हो जाता था, क्योंकि वह सोचता था कि फूल समझेंगे कि वह उसे भूल गया। मगर वह सदा सोचता

था कि मिलर उसका घनिष्ठ मित्र है और फिर वह उसे अपनी गाडी देने जा रहा था, और यह कितना वडा त्याग था।

इस तरहसे हैन्स दिनभर मिलरके लिए काम करता था और मिलर उसे रोज़ वहुत लच्छेदार शब्दोमे मित्रताके सिद्धान्त समझाता था जिन्हे हैन्स एक डायरीमे लिख लेता था और रातको उनपर ध्यानसे मनन करता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि रातको हैन्स अपनी अंगीठीके पास वैठा था। किसीने जोरसे दरवाजा खटखटाया। रात तूफानी थी और इतने जोरका अन्धड था कि वह समझा हवासे किवाड़ खड़का होगा। मगर दूसरी वार, तीसरी वार किवाड खडके।

"शायद कोई गरीव मुसाफिर है!" वह दरवाजा खोलने चला।

द्वारपर एक हाथमें लालटेन और दूसरेमे एक लाठी लिये मिलर खडा था।

"प्यारे हैन्स!" मिलर चिल्लाया—"मै वहुत दु:खमे हूँ! मेरा लडका सीढीसे गिर गया और मैं डाक्टरके पास जा रहा हूँ। मगर वह इतनी दूर रहता है और रात इतनी अन्धेरी है कि अगर तुम चले जाओ तो ज्यादा अच्छा हो। तुम जानते हो ऐसे ही अवसरपर तुम अपनी मित्रता दिखा सकते हो!"

"अवश्य मै अभी जाता हूँ! मगर तुम अपनी लालटेन मुझे दे दो! रात इतनी अन्धेरी है कि मै किसी खड्डमे न गिर पडूँ!"

"मुझे वहुत दु:ख है!" मिलर वोला—"मगर यह मेरी नई लालटेन है और अगर इसे कुछ हो गया तो मेरा वडा नुकसान होगा!"

"अच्छा मै योही चला जाऊँगा!"

वहुत भयानक तूफान था। हैन्स राह मुश्किलसे देख पाता था और

उसके पाँव नही ठहरते थे। किसी तरह ३ घण्टेमें वह डाक्टरके घरपर पहुँचा और उसने आवाज़ लगाई !

"कौन है !" डाक्टरने बाहर झाँका।

"मैं हूँ हैन्स, डाक्टर !"

"क्या बात है, हैन्स !"

"मिलरका लडका सीढीसे गिर गया है ! आप अभी चलिए।"

"अच्छा !" डाक्टरने कहा और अपने जूते पहने, लालटेन ली और घोडेपर चढकर चल दिया। हैन्स उसके पीछे चल पडा।

मगर तूफान बढता ही गया, पानी मूसलाधार बरसने लगा और हैन्स अपना रास्ता भूल गया। धीरे-धीरे वह ऊसरकी ओर चला गया जो पथरीला था और वहाँ एक खड्डमे डूब गया। दूसरे दिन गडरियोको उसकी लाश मिली और वे उसे उठा लाये।

हर एक आदमी हैन्सकी लाशके साथ गये, मिलर भी आया। "मैं उसका सबसे घनिष्ठ मित्र था, इसलिए मुझे सबसे आगे जगह मिलनी चाहिए।" यह कहकर काला कोट पहन कर वह सबसे आगे हो रहा और उसने जेबसे एक रुमाल निकालकर आँखोपर लगा लिया।

बादमें लौटकर वे सरायमें बैठ गये और इस समय केक खाते हुए लोहारने कहा—"हैन्सकी मृत्यु बडी ही दु खद रही !"

"मुझे तो बेहद दु:ख हुआ !" मिलरने कहा—"मैंने उसे अपनी गाड़ी दी थी। वह इस बुरी हालतमें है कि मैं उसे चला नही सकता, दूसरे उसे खरीद नही सकते। अब मैं क्या करूँ ? दुनिया भी कितनी स्वार्थी है ?" मिलरने शराब पीते हुए गहरी साँस लेकर कहा।

थोड़ी देर खामोशी रही। छछूँदरने पूछा—"तब फिर ?"

"तब क्या ? कहानी खत्म !" जलपक्षी बोला।

"अरे ! तो मिलर बेचारेका क्या हुआ ?" छछूँदरने कहा।

"मै क्या जानूँ ? मिलरसे मुझे क्या मतलब ?"

"छिः, तुममे ज़रा हमदर्दी नही बेचारेसे—"

"मिलरसे हमदर्दी—इसके मतलब तुमने कहानीका आदर्श ही नही समझा !"

"क्या नही समझा ?"

"आदर्श !"

"ओह !" छछूँदर झुझलाकर बोली—"मुझे क्या मालूम कि यह आदर्शवादी कहानी है। मालूम होता तो कभी न सुनती। आलोचकोकी तरह कहती—छि तुम पलायनवादी हो—धिक्कार ! और उसने गला फाडकर कहा "धिक्कार !" और पूँछ झटककर बिलमे घुस गयी।

आवाज सुनकर बत्तख दौड आयी।

"क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"कुछ नही ! मैने एक आदर्शवादी कहानी सुनाई थी—छछूँदर झुझला गयी !

"ओह यह बात थी !" बत्तख बोली—"भाई अपनेको खतरेमे डालते ही क्यो हो ! आजकल और आदर्शवादी कहानी ?"